

SHRI GIRISH BHARADWAJ

Born on May 12, 1950, Shri Bharadwaj received his Bachelor of Engineering (Mechanical) degree from the University of Mysore in 1973. Though Shri Bharadwaj wanted to join a company or Government service after graduation, his father's advice was against it. His father inspired him to use his technological knowledge for the benefit of farmers. Shri Bharadwaj took this advice seriously and started an Agro Service Centre in 1973 with his friend initially. Later in 1975, he established his own "Rational Engineering Industries" at Sullia which is now called AYASSHILPA. His initial job of repair of pump sets and Gobar Gas Plants was directly connected to rural development. However, he was pulled into the construction of Suspension Bridges which helped the people living on the opposite banks of rivers to keep connected even during rainy season. The first Bridge was built in his native village at Aramboor in 1989. It was a test of his innovative engineering skills. Later over the last 28 years, he has constructed 127 Suspension Foot Bridges(SFB) of varying spans and dimensions. Through this, he has bridged gaps between places, people and Hearts.

2. Now Shri Bharadwaj is popularly known as "Bridge Man" of the nation with the making of 128th "Suspension Foot Bridges" across 32 rivers in four states. But behind such popularity there has been tremendous hard work, dedication and determination to meet the challenges and risks passed by nature, courage to live in isolated forest spots, positive outlook in planning the designs, proven skills of team work, compassion towards helpless people blocked by floods, and love for humanity. Starting from the first bridge, every bridge was constructed by public demand to solve the non-connectivity between villages. It was a cost-effective enterprise with service motive that brought laurels of love and blessings of innocent rural people.

3. Shri Bharadwaj's "Love for labour and also for labourers" has given a neat finishing to every bridge with long durability. His policy of "win-win game" has brought smile on his face and also on the faces of team of workers and the beneficiaries of the bridges at end of each work. Where lies success of Shri Bharadwaj is in his simplicity and practical equality with workers that was evident as he sat, ate and slept in the tent camps for months while the construction work was going on. Most of such places were beyond civilian contact and unreachable through signals. There were dangers of nature, by animals and even by men such as naxals. Shri Bharadwaj has succeeded in overcoming the hazards and won the hearts of people.The talent and humanism of Shri Bharadwaj is known through his works and social service. Naturally people from far off places with similar zeal were attracted by him. Mr. Tony of Switzerland who builds Suspension bridges in poor countries came to see the works of Shri Bharadwaj and treated him as "Bridge Brother. Many students from reputed Engineering Institutions approach him for academic/ project guidance.

4. Shri Bharadwaj has natural instinct of social service which found exposure in his work as volunteer in free Rotary "Eye operation camp", polio-plus programme, excursion programme and in Home Guards as platoon commander and company commander. He is also Founder Secretary of Sneha Education Society of Sullia which provides basic quality education in Kannada Medium.

5. A "retired but not tired" Shri Bharadwaj finds his true reward in the smiles, gratitude and hugs of the beneficiaries of the bridges. His efforts and contribution to the Society has received great accolades and is reflected by the numerous awards and honors received by him. The Indian JAYCEES has honored him as the Outstanding Young Person of Karnataka in 1988. He was honoured with two Gold Medals for his services in Home Guards, Sir M Vishweshwarayya Award by Engineers Associations, GREEN CHAMPION by Indian Green Building Council, part of Confederation of Indian Industry, Zilla Rajyotsava Award, "Leader of the Century" by Lions International, "BE THE CHANGE" C J Award by CNN IBN Channel, "Peace Through Services" Award by Rotary International, "Asamanya Kannadiga" by Suvarna Media network and many more honors by local and regional level organizations.



श्री गिरिश भारद्वाज

आपका जन्म 12 मई 1950 को हुआ था। आपने वर्ष 1973 में मैसूर विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग (मैकेनिकल) में स्नातक किया। यद्यपि आप स्नातक के बाद किसी कंपनी या फिर सरकारी सेवा ज्वाइन करना चाहते थे, परंतु आपके पिताजी की सलाह इसके ठीक विपरीत थी। आपके पिताजी ने आपको अपने तकनीकी ज्ञान का उपयोग किसानों के लाभार्थ करने की प्रेरणा दी। आपने उनकी सलाह को गंभीरता से लिया और वर्ष 1973 में शुरू में अपने मित्रों के साथ मिलकर एग्रो सर्विस सेंटर की शुरूआत की। बाद में वर्ष 1975 में, आपने सुलिया में अपनी "रेशनल इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज" की स्थापना की, जो वर्तमान में 'आयासशिल्पा' के नाम से जाता है। पंप सेटों एवं गोबर गैस प्लांटों की मरम्मत करने का आपका प्रारंभिक कार्य प्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण विकास से जुड़ा हुआ था। तथापि, आप नदी पर सस्पेंशन ब्रिज के निर्माण कार्य में जुट गए जिससे वर्षा के मौसम में भी नदी के दोनों तटों पर रहने वाले लोगों की आवाजाही में सहायता मिली। इस तरह का पहला पुल आपके पैतृक गांव अराम्बूर में वर्ष 1989 में निर्मित किया गया। यह आपके अभिनव इंजीनियरिंग कौशल की परीक्षा थी। बाद के 28 वर्षों के दौरान आपने अलग-अलग लम्बाई एवं आयामों के 127 सस्पेंशन फुट ब्रिजों का निर्माण किया। इनके माध्यम से स्थानों, लोगों एवं दिलों की बीच की दूरी को जोड़ने का काम किया।

2. चार राज्यों में 32 नदियों के ऊपर 128 "सस्पेंशन फुट ब्रिजों" के निर्माण करने के कारण आप देश के "ब्रिज मैन" के रूप में लोकप्रिय हैं। परंतु इस प्रकार की लोकप्रियता के पीछे आपका कठिन परिश्रम, समर्पण तथा प्रकृतिकृत चुनौतियों एवं खतरों का सामना करने की दृढ़ इच्छा, निर्जन वन स्थानों में रहने का साहस, डिजायन बनाने में सकारात्मक दृष्टिकोण, कुशल टीम वर्क, बाढ़ पीड़ित नि:सहाय लोगों के प्रति दया एवं मानवता के प्रति प्रेम है। आपके द्वारा निर्माण किये गए प्रथम पुल से ही प्रत्येक पुल का निर्माण अलग-अलग जगहों पर स्थित गांवों के बीच सम्पकर्ता की कमी को दूर करने के संबंध में लोगों की मांग पर किया गया। यह ऐसा किफायती प्रयास था, जिसमें सेवा भावना अहम थी, जिसके लिए आपको सरल ग्रामवासियों का अथाह स्नेह एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

3. आपका "काम के प्रति प्यार और साथ ही कामगारों के प्रति प्यार" ने ही प्रत्येक पुल को मजबूती के साथ-साथ सुंदर भी बनाया। आपकी "विन-विन गेम" की नीति ने प्रत्येक कार्य के उपरांत स्वयं आपके चेहरे पर साथ ही साथ आपके टीम वर्कर्स और लाभार्थियों के चेहरे पर भी मुस्कान बिखेर दी। आपकी सहजता व कामगारों के साथ समानता का व्यवहार ही आपकी सफलता का सूत्र है, जो इस बात से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि निर्माण के दौरान आप महीनों तक शिविरों में उठते-बैठते, खाते और सोते जागते, इनके साथ ही बिताया। इनमें से ज्यादातर जगह नागरिक संपर्क से दूर निर्जन व सिगनलों की सीमा से परे थे। ऐसी जगहों पर प्राकृतिक आपदाओं, जंगली-जानवरों और यहां तक कि नक्सलियों का खतरा विद्यमान था। आपने इन खतरों पर विजय पाई, साथ ही साथ लोगों का दिल भी जीत लिया। आपकी प्रतिभा और मानवता के प्रति संवेदना आपके कार्यों व समाज-सेवाओं से जानी जाती है। स्वभाविक रूप से, सुदूरवर्ती स्थानों के लोग, जो आपके जैसे उत्साही हैं, वे आपसे आकर्षित हुए। स्विटजरलैंड के श्रीमान टोनी, जो गरीब देशों में जाकर, सस्पेंशन ब्रिज बनाते हैं, आपके कार्यों को देखने के लिए आए और वे आपको "ब्रिज ब्रदर" की उपाधि दी है। प्रख्यात इंजिनियंरिंग कॉलेजों के कई एक छात्र शैक्षिक/प्रोजेक्ट निर्देशन के लिए आपके पास आते हैं।

4. आपमें सामाजिक सेवा के प्रति एक स्वाभाविक प्रेरणा है, जो नि:शुल्क रोटेरी "आई ऑपरेशन कैंप", पोलियो-प्लस कार्यक्रमों एवं भ्रमण कार्यक्रमों में स्वयं सेवक एवं होमगार्डों में प्लाटून कमांडर एवं कंपनी कमांडर के रूप में आपके द्वारा दी गई सेवा से सिद्ध होता है। आप स्नेह एज्युकेशन सोसायटी ऑफ सुलिया के संस्थापक सचिव भी हैं, यह संस्था कन्नड़ माध्यम से मूलभूत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराती है।

5. आप "सेवानिवृत्त हैं परंतु कार्य से थके नहीं हैं"। आपके द्वारा निर्मित पुलों के लाभार्थियों द्वारा आपको मिलने वाला अपार स्नेह, आभार, स्नेहालिंग्न तथा उनकी सरल मुस्कान आपके लिए वास्तविक पुरस्कार है। समाज के प्रति आपके द्वारा दिए गए योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है एवं यह आपको मिलने वाले अनेक पुरस्कारों और सम्मानों में से है। इंडियन JAYCEES ने वर्ष 1988 में आपको "ऑउटस्टैडिंग यंग पर्सन ऑफ कर्नाटक" के पुरस्कार से सम्मानित किया। होमगार्ड में आपकी सेवा के लिए आपको दो स्वर्ण पदकों, इंजीनियर्स एसोशिएशंस द्वारा सर एम विश्वेसरैया पुरस्कार, इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल द्वारा ग्रीन चैंम्पियंस पुरस्कार, पार्ट ऑफ कंफेडरेशन ऑफ इंडिया इंडस्ट्री, जिला राज्योत्सव पुरस्कार, लायंस इंटरनेशनल द्वारा 'लीडर ऑफ सेन्चुरी, सी एन एन आई बी ए चैनल द्वारा 'बी द चैंज' सी. जे. पुरस्कार, रोटेरी इंटरनेशनल द्वारा "पीस थ्रु सर्विसेस" पुरस्कार, सुवर्ण मीडिया नेटवर्क द्वारा "असामान्य कन्नडीगा" पुरस्कार और स्थानीय एवं क्षेत्रीय संगठनों द्वारा अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित किया गया है।